वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

वेद प्रकाश

मासिक पत्र (6-7 प्रतिमाह) मूल्यः ५ रुपये (३०/-वार्षिक) मार्च २०१८

कुल पृष्ठ संख्या २०, वजनः 40 ग्राम
प्रकाशन तिथिः 4 मार्च 2018

अन्तःपथ

कहानी बुद्धिमान् राजा *–आचार्य दयाराम राव*	३ से ६
नीरुशेख की बेटी बुशरा उर्फ बंसत कौर की ऐतिहासिक सत्य कथा, इमाम दीन मुहम्मद बने स्वामी विज्ञानानंद *–फरहाना ताज*	६ से ८
सृष्टि या ब्रह्माण्ड रचना *–आर्य जिज्ञासु*	८ से १६
बड़े बावरे हिन्दी के मुहावरे	१७ से १८

मनुष्य का आत्मा सत्याऽसत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। *–महर्षि दयानन्द सरस्वती जी*

आर्य समाज की स्थापना के समय महर्षि दयानंद का वक्तव्य

"1875 में मुम्बई में जब कई उत्साही सज्जनों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के समक्ष नया 'समाज' स्थापित करने का प्रस्ताव रखा, तब उस दीर्घद्रष्टा ऋषि ने अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए और उन लोगों को सावधान करते हुए कहा।

"भाई, हमारा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है। मैं तो वेद के अधीन हूँ और हमारे भारत में पच्चीस कोटि (उस समय की भारत की जनसंख्या) आर्य हैं। कई-कई बात में किसी-किसी में कुछ-कुछ भेद है, सो विचार करने से आप ही आप छूट जाएगा। मैं संन्यासी हूँ और मेरा कर्तव्य यही है कि जो आप लोगों का अन्न खाता हूँ, इसके बदले जो सत्य समझता हूँ, उसका निर्भयता से उपदेश करता हूँ। मैं कुछ कीर्ति का रागी नहीं हूँ। चाहे कोई मेरी स्तुति करे या निन्दा करे, मैं अपना कर्तव्य समझ के धर्म-बोध कराता हूँ। कोई चाहे माने वा न माने, इसमें मेरी कोई हानि-लाभ नहीं है।...आप यदि समाज से पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो, तो समाज स्थापित कर लो। इसमें मेरी कोई हानि-लाभ नहीं है। इसमें मेरी कोई मनाई नहीं है। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय हो जाएगा। मैं तो जैसा अन्य को उपदेश देता हूँ, वैसा ही आपको भी करूँगा और इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूँ। इससे यदि कोई मेरी गलती आगे पाई जाए तो युक्तिपूर्वक परीक्षा करके इसी को भी सुधार लेना। यदि ऐसा न करोगे तो आगे यह भी एक 'मत' (सम्प्रदाय) हो जाएगा और इसी प्रकार से 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' करके इस भारत में नाना प्रकार के मतमतान्तर प्रचलित होके, भीतर-भीतर दुराग्रह रख के धर्मान्ध होके लड़कर नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है, इसमें यह भी एक मत बढ़ेगा। मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारतवर्ष में नाना मतमतान्तर प्रचलित हैं, तो भी वे सब वेदों को मानते हैं। इससे वेदशास्त्र रूपी समुद्र में यह सब नदी-नाव पुनः मिला देने से धर्म ऐक्यता होगी और धर्म ऐक्यता से सांसारिक और व्यावहारिक सुधारणा होगी और इससे कला-कौशल आदि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्य मात्र का जीवन सफल होके अन्त में अपना धर्म बल से अर्थ, काम और मोक्ष मिल सकता है।" —**स्वामी दयानंद**

वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६७ अंक ८ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, मार्च, २०१८

सम्पा॰ **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व॰ **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

कहानी बुद्धिमान् राजा

—आचार्य दयाराम राव

एक समय किसी राज्य की ऐसी व्यवस्था थी, कि उस राज्य में जिस भी व्यक्ति को राजा बनाया जाता, चार साल बाद उसे उस राज्य से बाहर एक खतरनाक जंगल में जाना होता था। और उस जंगल में बहुत से खतरनाक जानवर रहते थे। उस जंगल में जाने के बाद कोई व्यक्ति वापस नहीं आ पाता था। या तो भूखा प्यासा मर जाता, या वहाँ के खतरनाक जीव जंतु उसका जीवन समाप्त कर देते...।

अब समस्या यह थी...कि राज्य का जो भी राजा बनता...राजा बनने से पहले तो बहुत खुश होता...परंतु राजा बनते ही उसे यह चिंता सताने लगती... कि 4 साल बाद जब राजा का कार्यकाल खत्म होगा...तो नियमानुसार उस जंगल में जाना होगा।...वहाँ मृत्यु निश्चित है।

इस बात को सोच-सोचकर राज्य का सुख तो क्या ले पाता...?...सदा चिंतित रहता...सदा यही विचार सताता रहता था कि जंगल में जाने पर क्या-क्या दुख उठाने पड़ेंगे। किस-किस प्रकार की भयंकर परिस्थितियों से सामना करना पड़ेगा...? कैसी भयानक स्थितियों में मृत्यु होगी...और ना जाने वहाँ कितने काल तक दुखी रहते हुए जीना होगा।

उसका कोई उपाय नजर नहीं आता था।...इसलिए जो भी राजा बनता वह इतना चिंतित हो जाता...कि 4 साल राज्यकाल में सदा दुखी होता रहता था।... कभी किसी प्रकार का सुख नहीं ले पाता...और सदा अवसाद में रहना पड़ता।

धीरे-धीरे ऐसी स्थिति बन गई...कि कोई राजा नहीं बनना चाहता था...। जब 4 साल का कार्यकाल पूरा होता...तो बड़ी मुश्किल हो जाती।

ऐसे ही स्थिति में एक बार बहुत अधिक प्रयास करने पर भी कोई व्यक्ति राजा बनने के लिए तैयार नहीं हुआ...।...समय बहुत थोड़ा बचा गया था।...बिना

राजा के तो कोई राज्य चल नहीं सकता...। इस बात को नजर-नजर में रखते हुए मंत्रिमंडल के लोग बहुत अधिक चिंतित थे, कि अब क्या किया जाए...!

चिंतन चलते-चलते अचानक उनके सामने एक व्यक्ति प्रस्तुत हुआ...।... वह उस राज्य का तो रहने वाला नहीं था, परंतु देखने में बुद्धिमान नजर आ रहा था।...उसने कहा कि मैं राजा बनने को तैयार हूँ और आपकी सारी शर्तें मुझे मालूम हैं।

परंतु मेरे राज्य-काल के दौरान मेरे किसी निर्णय में कोई रुकावट नहीं करेगा।...हाँ, मैं कोई भी निर्णय राज्य के नियम के विरुद्ध नहीं लूँगा।

अब क्या था...? मंत्रिमंडल के लोग बहुत खुश हुए...और तुरंत ही उसको राजा बनाने के लिए तैयार हो गए।...एक बार फिर से उसको सारी बातें बता दी गई...कि 4 साल के बाद आपको सामने के जंगल में जाना होगा...और वहाँ बहुत खतरनाक जानवर रहते हैं...वहाँ की स्थिति बड़ी भयंकर है।...वहाँ कुछ खाने पीने को नहीं मिलता।....इस बात को अच्छे से जान लो। कहीं ऐसा न हो कि बाद में आपको पछताना पड़े...!

उस व्यक्ति ने राजी-राजी हामी भर ली...और फिर राजा बना दिया गया। उसने अपना राज-काज का पूरा काम संभाल लिया।...काफी बुद्धिमानी से न्याय पूर्वक अच्छे प्रशासक की भाँति राजकाज चलाने लगा।....और बड़े आनंद से राज्य सुख भी भोगने लगा।

एक दिन मंत्रिमंडल के लोग आपस में चर्चा करने लगे...कि यह तो कोई चिंता ही नहीं कर रहा...कभी उसके चेहरे पर उदासी नहीं मिलती। इसको तो 4 साल बाद मरने का डर बिल्कुल भी नहीं लग रहा...लगता है यह शर्तें भूल गया है...तो इस को बताना चाहिए...।

ऐसा सोच कर प्रधानमंत्री राजा से बोला..."महाराज आपको याद है ना कि आपके कार्यकाल के बाद आपको जंगल में जाना होगा?"

उसने कहा "भाई मुझे अच्छे से याद है, और मैं तो सदा ही याद रखता हूँ" और शांत हो गया।...और एक साल निकल गया। फिर से मंत्रिमंडल के लोगों ने वही सलाह राजा को दी। किन्तु राजा पर तो चिंता का कोई चिह्न नजर नहीं आया।

ऐसा क्या है...इसको भय क्यों नहीं लगता...? फिर से याद दिलाना चाहिए...!...प्रधानमंत्री ने फिर से वैसा ही किया। इस बार भी राजा ने उत्तर

दिया, "भाई मुझे अच्छे से याद है।"

अंतिम साल बच गया तब फिर एक बार मंत्री ने फिर से राजा को याद दिलाया...। परंतु...परिणाम फिर भी वही आया।

अब तो मंत्रिमंडल के लोगों को बड़ी चिंता हुई।...कि हो ना हो...या तो यह राजा पागल है...या कोई अन्य बात है।

जब एक महीना बच गया तो फिर से मंत्रिमंडल की गुप्त मीटिंग हुई। और राजा से सामूहिक तौर से बात करने की योजना बनी। सब ने मिलकर राजा से कहा, कि महाराज आपके कार्यकाल के बहुत थोड़े से दिन बच गए। अब आपको राज्य को छोड़कर जंगल में जाना होगा।

राजा ने कहा, "भाई मुझे अच्छे से याद है, मुझे जंगल में जाना है।" मंत्रिमंडल के लोगों ने कहा, "महाराज आपको चिंता बिल्कुल नहीं हो रही? ऐसा क्यों...? आपको पता है कि वहाँ खतरनाक जानवर रहते हैं। और वहाँ की परिस्थिति भी खराब है।...वहाँ कुछ खाने को भी नहीं मिलता। फिर भी आप चिंतित नहीं है...और बड़े मजे से अपना राजकाज चला रहे हैं। ऐसा क्यों...?

राजा बोला भाई इसमें कोई चिंता की बात ही नहीं। मैंने अपना पूरा इंतजाम कर लिया है।...अब तो मंत्रिमंडल के सभी सदस्य आश्चर्य में पड़ गए। कहने लगे "महाराज कैसे...? अब तक तो जितने राजा हुए हैं...उन्होंने अपना कार्यकाल ही पूरा नहीं किया।"..."चिंता करते-करते बीच में ही उनकी मृत्यु हो जाती थी।"..."आपने ऐसा कौन सा इंतजाम कर लिया कि आप को बिलकुल भी भय नहीं लग रहा।"

राजा ने हँसते हुए कहा, "भाई जब 4 साल तक मैं इस राज्य का राजा रहा हूँ...तो इतना अधिकार तो मेरे पास था ही ना, कि मैं यहाँ से 4 साल के बाद जाऊँगा।" "यदि वहाँ की स्थिति को ठीक कर लूँ।"..."तो मैंने अपने आदमी भेज कर...सेवकों के माध्यम से राजकोष से पैसा लेकर, उस जंगल को एक सुंदर बगीचे के रूप में तैयार करवा लिया। और वहाँ जितने खतरनाक जानवर थे, उनको वहाँ से भगा दिया।"

..."और वहाँ अच्छे-अच्छे फलदार वृक्ष, पानी के तालाब, रास्ते, सड़कें और अपने रहने के लिए एक राजमहल और अपनी आवश्यकता के लिए सेवकों के रहने के लिए एक पूरी बस्ती बनवा ली है।"

"तो जब मैं अपना राज्य काल पूरा करके, वहाँ जाऊँगा तो वहाँ अपने

राजमहल में, अपने सेवकों के साथ बगीचे में (जो पहले भयानक जंगल था) खेती का कार्य, फल बागवानी का कार्य अपने सेवकों से करवा कर आनंद में रहूँगा।"...मुझे भय किस बात का...???

सभी दरबारी और राज्य के लोग आश्चर्यचकित थे, कि आज तक किसी को यह बात समझ में क्यों नहीं आई...? सभी बड़े प्रसन्न हुए और उस राजा को आनंदपूर्वक वहाँ से विदा किया...।

चारों और उसकी प्रशंसा होने लगी, कि अपनी बुद्धि से व्यक्ति विकट से विकट समस्या का भी समाधान कर सकता है।

तो इस कहानी से हमें बड़ा सुंदर संदेश मिलता है...कि जीवन के जो हमारे चार आश्रय हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास।...इन चारों आश्रमों को हम वेदों के अनुसार, ऋषियों के आदेशों के अनुसार, यदि शुभ कर्म करके अपना जीवन पुण्य से भर लें...।

तो हमें मृत्यु का भय क्यों होगा। क्योंकि भाई...भय तो तभी लगता है जब हम अपना आगे का इंतजाम पूरा नहीं करें। और यह आशंका बनी रहे कि आगे पता नहीं हमारे रहने के लिए सुख के लिए कोई साधन उपलब्ध होगा या नहीं होगा। न जाने आगे कैसी-कैसी खतरनाक परिस्थितियाँ सामने आएँगी।

इसलिए अपने जीवन को यदि हम शुरू से ही पुण्य से भर लें, पुण्य करते हुए जीने का अभ्यास बना ले...तो मृत्यु का भय समापत हो जाएगा। और यह जीवन एक आनंद का उत्सव बन जाएगा।

नीरुशेख की बेटी बुशरा उर्फ बंसत कौर की ऐतिहासिक सत्य कथा, इमाम दीन मुहम्मद बने स्वामी विज्ञानानंद

—फरहाना ताज

लाहौर के दातागंजबख्श मोहल्ले में रहने वाली बालिका बुशरा नीरु शेख की बेटी थी। 1943 की बात है यह, जब उनके घर में पटना की जामा मस्जिद के इमाम दीन मुहम्मद अतिथि के रूप में आए थे। शाम का वक्त था इमाम साहब नमाज पढ़ रहे थे कि अचानक ही उसकी नमाज में खलल पड़ गया, क्योंकि बालिका बुशरा जिसकी उम्र मुश्किल से दस साल होगी तिक-तिक

खेलती हुई हिन्दुओं का गायत्री मंत्र पढ़ रही थी। इमाम साहब ने अचानक ही नमाज छोड़ दी और बालिका के पास आकर उसका कान पकड़कर ऐंठते हुए बोला, "यह काफिरों का मंत्र कहाँ से सीखा?"

"वेदानंद बाबा ने सिखाया है।"

"वह कौन है?"

"हमारे ही तो घर में रहते हैं किराएदार"

"लाहौलविलाकुवत आपके घर में एक काफिर रहता है और आपको भी काफिर बना दिया।" फिर बालिका से पूछा, "कहाँ हैं वे इस समय?"

"ऊपर के कक्ष में!"

इमाम दीन मुहम्मद चले गए थे बाबा वेदानंद के पास, स्वामी वेदानंद जी कुछ लिख रहे थे, तो दीन मोहम्मद ने पूछा, "बाबा क्या लिख रहे हैं आप?"

"आइए बैठिए", उन्होंने इमाम का स्वागत किया और कहा, नई किताब "मिरजाई और वेद" लिख रहा हूँ।

"यह कैसी किताब है?"

"इस्लाम की समालोचना है इनमें।"

"और ऐसी ही समालोचना सुनाकर एक मासूम बालिका को काफिर बना रहे हो?" बुशरा की ओर इशारा करते हुए कहा, जो वहाँ पहुँच चुकी थी।

"देखो भाई हम तो सत्य कहते हैं और उसका ही प्रचार करते हैं, आपको भी सत्य की राह पर चलना हो तो हमसे मुबाहिसा (बहस) कर सकते हो।"

"और मुबाहिसा में आप हार गए तो?" इमाम ने कहा।

"में इस्लाम कबूल कर लूँगा।" वेदानंद बाबा ने कहा, जिनका पूरा नाम स्वामी वेदानंद तीर्थ था, स्वामी दयानंद के शिष्य थे और जो कभी लाहौर में दयानंद उपदेशक विद्यालय के मुख्य अध्यापक रह चुके थे, लेकिन इस समय किसी कारणवश एक मुस्लिम मुहल्ले में रह रहे थे।

"और चाचा आप हार गए तो," बुशरा ने जबान चलाते हुए इमाम से कहा, "इस्लाम छोड़कर वैदिक धर्म अपनाना पड़ेगा मेरी और मेरे अब्बू की तरह..."

"हमें मंजूर है। दोनों ओर से शर्ते लिखित में मंजूर हुई और विद्वानों की एक निर्णायक समिति के सामने दोनों का शास्त्रार्थ हुआ। तीन दिनों तक वेद और कुरान पर शास्त्रार्थ हुआ और अंततः इमाम साहब पराजित हो गए और

उन्होंने हार मानते हुए स्वामी वेदानंद तीर्थ के हाथों वैदिक धर्म धारण करके वेदों का प्रचार करने का प्रण लिया और कालांतर में इमाम साहब स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती के नाम से जाने गए। उन्होंने वेदों के प्रचार की धूम मचा दी। गाजियाबाद के शहर के बीच लाला शंभूदयाल ने उनसे प्रभावित होकर एक एकड़ कीमती जमीन उनको दान कर दी, जिसमें उन्होंने वेदों का अध्ययन और प्रचार करने के लिए एक आश्रम की स्थापना की।

6 मार्च 1980 को 98 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। स्वामी विज्ञानानंद के कई शिष्य योग्य सांसद बने, शिक्षक बने, वैज्ञानिक बने इसलिए उन्हें दुनिया भर में जाना गया, लेकिन बुशरा, जिनका नाम बसंतकौर हो गया था एक आर्य पंजाबी युवक से शादी के बाद उन्हें कौन जानता है...कोई भी नहीं, शायद मैं भी नहीं जान पाती यदि उनकी आत्मकथा पर आधारित उपन्यास बसंती" न पढ़ा होता तो...

साभार-वेद वृक्ष की छाँव तले-लेखिका फरहाना ताज

सृष्टि या ब्रह्माण्ड रचना

– आर्य जिज्ञासु

(1)प्रश्नः–ब्रह्माण्ड की रचना किससे हुई?

उत्तरः–ब्रह्माण्ड की रचना प्रकृति से हुई।

(2)प्रश्नः–ब्रह्माण्ड की रचना किसने की?

उत्तरः–ब्रह्माण्ड की रचना निराकार ईश्वर ने की जो कि सर्वव्यापक है। कण-कण में विद्यमान है।

(3)प्रश्नः–साकार ईश्वर सृष्टि क्यों नहीं रच सकता?

उत्तरः–क्योंकि साकार रूप में वह प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं को आपस में संयुक्त नहीं कर सकता।

(4)प्रश्नः–लेकिन ईश्वर तो सर्वशक्तिमान है। अपनी शक्ति से वो ये भी कर सकता है।

उत्तरः–ईश्वर की शक्ति उसका गुण है न कि द्रव्य। जो गुण होता है वो उसी पदार्थ के भीतर रहता है न कि पदार्थ से बाहर निकल सकता है। तो यदि ईश्वर साकार हो तो उसका गुण उसके भीतर ही मानना होगा तो ऐसे में केवल एक ही स्थान पर खड़ा होकर पूरे ब्रह्माण्ड की रचना कैसे कर सकेगा? इससे ईश्वर अल्प शक्ति वाला सिद्ध हुआ। अतः ईश्वर निराकार

है न कि साकार।

(5)प्रश्नः–लेकिन हम मानते हैं कि ईश्वर साकार भी है और निराकार भी।

उत्तरः–एक ही पदार्थ में दो विरोधी गुण कभी नहीं होते हैं। या तो वो साकार होगा या निराकार। अब सामने खड़ा जानवर या तो घोड़ा है या गधा। वह घोड़ा और गधा दोनों ही एक साथ नहीं हो सकता।

(6)प्रश्नः–ईश्वर पूरे ब्रह्माण्ड के कण-कण में विद्यमान है ये कैसे सिद्ध होता है?

उत्तरः–एक नियम है–(क्रिया वहीं पर होगा जहाँ उसका कर्ता होगा) तो पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं कुछ न कुछ बन रहा है तो कहीं न कहीं कुछ बिगड़ रहा है। और सारे पदार्थ भी ब्रह्माण्ड में गति कर रहे हैं। तो ये सब क्रियाएँ जहाँ पर हो रही हैं वहाँ निश्चित ही कोई न कोई अति सूक्ष्म चेतन सत्ता है। जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

(7)प्रश्नः–यदि ईश्वर सर्वत्र है तो क्या संसार की गंदी-गंदी वस्तुओं में भी है? जैसे मल, मूत्र, कूड़े करकट के ढेर आदि?

उत्तरः–अवश्य है क्योंकि ये जो गंदगी है वो केवल शरीर वाले को ही गंदा करती है न कि निराकार को। अब आप स्वयं सोचें कि मल-मूत्र भी किसी न किसी परमाणुओं से ही बने हैं तो क्या परमाणु गंदे होते हैं? बिल्कुल भी नहीं होते। बल्कि जब ये आपस में मिल कर कोई जैविक पदार्थ का निर्माण करते हैं तो ये कुछ तो शरीर के लिए बेकार होते हैं जिन्हें हम गुदा-द्वार या मूत्रेन्द्रीय से बाहर कर देते हैं। इसी कारण से ईश्वर सर्वत्र है। गंदगी उस चेतन के लिए गंदी नहीं है।

(8) प्रश्नः–ईश्वर के बिना ही ब्रह्माण्ड अपने आप ही क्यों नहीं बन गया?

उत्तरः–क्योंकि प्रकृति जड़ पदार्थ है और ईश्वर चेतन है। बिना चेतन सत्ता के जड़ पदार्थ कभी भी अपने आप गति नहीं कर सकता। इसी को न्यूटन ने अपने पहले गति नियम में कहा है:– (Every thing persists in the state of rest or of uniform motion, until and unless it is compelled by some external force to change that state-Newton's First Law of Motion) तो ये चेतन का अभिप्राय ही यहाँ External Force है।

(9)प्रश्नः–क्यों External Force का अर्थ तो बाहरी बल है तो यहाँ पर

आप चेतना का अर्थ कैसे ले सकते हो?

उत्तरः—क्योंकि बाहरी बल जो है वो किसी बल वाले के लगाए बिना संभव नहीं। तो निश्चय ही वो बल लगाने वाला मूल में चेतन ही होता है। आप एक भी उदाहरण ऐसी नहीं दे सकते जहाँ किसी जड़ पदार्थ द्वारा ही बल दिया गया हो और कोई दूसरा पदार्थ चल पड़ा हो।

(10) प्रश्नः—तो ईश्वर ने ये ब्रह्माण्ड प्रकृति से कैसे रचा?

उत्तरः—उससे पहले आप प्रकृति और ईश्वर को समझें।

(11) प्रश्नः—प्रकृति के बारे में समझाएँ।

उत्तरः—प्रकृति कहते हैं सृष्टि के मूल परमाणुओं को। जैसे किसी वस्तु के मूल अणु को आप Atom के नाम से जानते हो। लेकिन आगे उसी Atom (अणु) के भाग करके आप Electron (ऋणावेष), Proton (धनावेष), Neutron (नाभिकिय कण), तक पहुँच जाते हो। और उससे भी आगे इन कणों को भी तोड़ते हो तो Positrons, Neutrinos, Quarks में बढ़ते जाते हैं। इस प्रकार से विभाजन करते-करते आप जाकर एक निश्चित मूल पर टिक जाओगे। और वह मूल जो परमाणु में जोड़-जोड़ कर बड़े-बड़े कण बनते चले गए हैं वे ही प्रकृति के परमाणु कहलाते हैं। प्रकृति के तो परमाणु होते है। सत्य (Positive+) रजस् (Negative -) तमस् (Neutral) इन तीनों को सामूहिक रूप में प्रकृति कहा जाता है।

(12) प्रश्नः—क्या प्रकृति नाम का कोई एक ही परमाणु नहीं है?

उत्तरः—नहीं, (सत्व, रज और तम) तीनों प्रकार के मूल कणों को सामूहिक रूप में प्रकृति कहा जाता है। कोई एक ही कण का नाम प्रकृति नहीं है।

(13) प्रश्नः—तो क्या सृष्टि के किसी भी पदार्थ की रचना इन प्रकृति के परमाणुओं से ही हुई है?

उत्तरः—जी अवश्य ही ऐसा हुआ है। क्योंकि सृष्टि के हर पदार्थ में तीनों ही गुण (Positive, Negative & Neutral) पाए जाते हैं।

(14) प्रश्नः—ये स्पष्ट कीजिए कि सृष्टि के हर पदार्थ में तीनों ही गुण होते हैं, क्योंकि जैसे Electron होता है वो तो केवल Negative ही होता है यानि के रजोगुण से युक्त तो बाकी के दो गुण उसमें कहाँ से आ सकते हैं?

उत्तरः—नहीं ऐसा नहीं है, उस ऋणावेष यानी Electron में भी तीनों गुण ही हैं। क्योंकि होता ये है कि पदार्थ में जिस गुण की प्रधानता होती है वही प्रमुख गुण उस पदार्थ का हो जाता है। तो ऐसे ही ऋणावेष में तीनों गुण सत्व, रजस् और तमस तो हैं लेकिन ऋणावेष में रजोगुण की प्रधानता है परंतु सत्वगुण और तमोगुण गौण रूप में उसमें रहते हैं। ठीक वैसे ही Proton यानी धनावेष में सत्वगुण की प्रधानता अधिक है परंतु रजोगुण और तमोगुण गौण रूप में हैं। और ऐसे ही तीसरा कण Neutron यानी कि नाभिकीय कण में तमोगुण अधिक प्रधान रूप में है और सत्व एंव रज गौणरूप में हैं। तो ठीक ऐसे ही सृष्टि के सारे पदार्थों का निर्माण इन गुणों से हुआ है। पर इन गुणों की मात्रा हर एक पदार्थ में भिन्न-भिन्न है। इसीलिए सारे पदार्थ एक-दूसरे से भिन्न दिखते हैं।

(15) प्रश्नः—तीनों गुणों को और स्पष्ट करें।

उत्तरः—सत्व गुण कहते हैं आकर्षण से युक्त को, तमोगुण निष्क्रिय या मोह वाला होता है, रजोगुण होता है चंचल स्वभाव का। इसे ऐसे समझेः—नाभिकम् (Neucleus) में जो नाभिकीय कण (Neucleus) है वो मोह रूप है क्योंकि इसमें तमोगुण की प्रधानता है। और इसी कारण से ये अणु के केन्द्र में निष्क्रिय पड़ा रहता है। और जो धनावेष (Proton) है वे भी केन्द्र में है पर उसमें सत्वगुण की प्रधानता होने से वो ऋणावेष (Electron) को खींचे रहता है। क्योंकि आकर्षण उसका स्वभाव है। तीसरा जो ऋणावेष (Electron) है उसमें रजोगुण की प्रधानता होने से चंचल स्वभाव है इसीलिए वो अणु के केन्द्र नाभिकम् की परिक्रमा करता रहता है। दूर-दूर को दौड़ता है।

(16) प्रश्नः—तो क्या सृष्टि के सारे ही पदार्थ तीनों गुणों से ही बने हैं? तो फिर सब में विलक्षणता क्या है! सभी एक जैसे क्यों नहीं?

उत्तरः—जी हाँ, सारे ही पदार्थ तीनों गुणों से बने हैं। क्योंकि सब पदार्थों में तीनों गुणों का परिणाम भिन्न-भिन्न है। जैसे आप उदाहरण के लिए लोहे का एक टुकड़ा ले लें तो उस टुकड़े के हर एक भाग में जो अणु हैं वो एक से हैं और वो जो अणु हैं उनमें सत्व रज और तम की निश्चित मात्रा एक सी है।

(17) प्रश्नः—पदार्थ की उत्पत्ति (Creation) किसको कहते हैं?

उत्तर:—जब एक जैसी सूक्ष्म मूलभूत इकाईयाँ आपस में संयुक्त होती चली जाती हैं तो जो उन इकाईयों का एक विशाल समूह हमारे सामने आता है उसे ही हम उस पदार्थ का उत्पन्न होना मानते हैं। जैसे ईटों को जोड़-जोड़ कर कमरा बनता है, लोहे के अणुओं को जोड़-जोड़ कर लोहा बनता है, सोने के अणुओं को जोड़-जोड़कर सोना बनता है आदि। सीधा कहें तो सूक्ष्म परमाणुओं का आपस में विज्ञानपूर्वक संयुक्त हो जाना ही उस पदार्थ की उत्पति है।

(18) प्रश्न:—पदार्थ का नाश (Destruction) किसे कहते हैं?

उत्तर:—जब पदार्थ की जो मूलभूत इकाईयाँ थीं वो आपस में एक-दूसरे से दूर हो जाएँ तो जो पदार्थ हमारी इन्द्रियों से ग्रहीत होता था वो अब नहीं हो रहा उसी को उस पदार्थ का नाश कहते हैं। जैसे मिट्टी का घड़ा बहुत समय तक घिसता-घिसता वापिस मिट्टी में लीन हो जाता है, कागज को जलाने से उसके अणुओं का भेदन हो जाता है आदि। सीधा कहें तो वह सूक्ष्म परमाणु जिनसे वो पदार्थ बना है, जब वो आपस में से दूर हो जाते हैं और अपनी मूल अवस्था में पहुँच जाते हैं उसी को हम पदार्थ का नष्ट होना कहते हैं।

(19) प्रश्न:—सृष्टि की उत्पत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर:—जब मूल प्रकृति के परमाणु आपस में विज्ञान पूर्वक मिलते चले जाते हैं तो अनगिनत पदार्थों की उत्पत्ति होती चली जाती है। हम इसी को सृष्टि या ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कहते हैं।

(20) प्रश्न:—सृष्टि का नाश या प्रलय किसको कहते हैं?

उत्तर:—जब सारी सृष्टि के परमाणु आपस में एक-दूसरे से दूर होते चले जाते हैं तो सारे पदार्थ का नाश होता जाता है और ऐसे ही सारी सृष्टि अपने मूल कारण प्रकृति में लीन हो जाती है। इसी को हम सृष्टि या ब्रह्माण्ड का नाश कहते हैं।

(21) प्रश्न:—हम बिना किसी प्रकृति के सृष्टि की उत्पत्ति क्यों नहीं मान सकते?

उत्तर:—क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं होता। ठीक ऐसे ही प्रकृति कारण है और सृष्टि कार्य है।

(22) प्रश्न:—क्यों हम ऐसा क्यों न मान लें कि सृष्टि बिना प्रकृति के शून्य

से ही पैदा हो गई? ऐसा मानने में क्या खराबी है?

उत्तर:—क्योंकि कोई भी पदार्थ शून्य से उत्पन्न नहीं हो सकता। भाव से ही भाव होता है, और अभाव से कभी भाव नहीं हो सकता।

(23) प्रश्न:—कोई भी वस्तु शून्य से क्यों नहीं बन सकती?

उत्तर:—क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं होता। अगर आप शून्य से उत्पत्ति मान भी लोगे तो आपको शून्य को कारण बोलना ही पड़ेगा और पदार्थ को उसका कार्य। लेकिन शून्य का अर्थ है Zero (nothing) या कुछ भी नहीं। लेकिन शून्य कभी किसी का कारण नहीं होता। तो इसी कारण ऐसा मानना युक्त नहीं है।

(24) प्रश्न:—ऐसा मानना युक्त क्यों नहीं है? शून्य किसी का कारण क्यों नहीं होता?

उत्तर:—क्योंकि जो जैसा कारण होता है उसका कार्य भी वैसा होता है। जैसे लड्डू की सामग्री से लड्डू ही बनेंगे, खीर नहीं। आटे से रोटी ही बनेगी, दलिया नहीं। दूध से पनीर ही बनेगा, शहद नहीं। तो ऐसे ही शून्य से शून्य ही बनेगा पदार्थ नहीं।

(25) प्रश्न:—तो अब ये बतायें कि प्रकृति से ब्रह्माण्ड के ये सारे पदार्थ कैसे बन गए?

उत्तर:—पहले प्रकृति से पंचमहाभूत बने: आकाश, अग्नि, वायु जल, पृथिवी।

(26) प्रश्न:—आकाश तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तर:—आकाश बोलते हैं खाली स्थान को या शून्य को (vacuum) और पहले जब प्रकृति मूल अवस्था में थी तो सारे प्रकृति परमाणु पूरे ब्रह्माण्ड में भरे हुए थे। और जब वो आपस में जुड़ने लगे तो जहाँ से वो हटते चले गए वहाँ रिक्त स्थान बनता गया उसी को सर्वत्र हम आकाश तत्व कहते हैं।

(27) प्रश्न:—अग्नि तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तर:—जिस तत्व के कारण गर्मी या ऊष्मा होती है उसे ही अग्नि तत्व कहते हैं। जब प्रकृति के परमाणु आपस में जुड़ रहे थे तो उनमें आपस में घर्षण (रगड़ लगना) हुआ। तो आपस में रगड़ने से गर्मी पैदा होती है उसी तत्व को हम अग्नि तत्व कहते हैं।

(28) प्रश्नः–वायु तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तरः–जिसके कारण पदार्थों में वातता (Gaseousness) आती है, वही वायु तत्व होता है। जब प्रकृति के परमाणु आपस में जुड़ते चले गए तो जो पदार्थ बने वो तो धुआँदार ही थे क्योंकि उनके अणुओं में विरलापन था। जैसे कि Gasecus state में होता है। तो वही विरलापन वाला गुण ही वायु तत्व कहलाता है। तो कह सकते हैं कि सबसे पहले Gases ही अस्तित्व में आई।

(29) प्रश्नः–जल तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तरः–जिसके कारण पदार्थों में तरलता आती है, वही जल तत्व होता है। जब प्रकृति के परमाणु आपस में जुड़ते-जुड़ते उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं जहाँ पर उनमें पहले की अपेक्षा घनत्व और बढ़ जाता है। तो तरलता होने लगती है तो उसी तत्व को हम जल तत्व कहते हैं।

(30) प्रश्नः–पृथिवी तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तरः–जिसके कारण पदार्थों में ठोसपन आता है, वही पृथिवी तत्व होता है। जब प्रकृति के परमाणु आपस में जुड़ते-जुड़ते उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं जहाँ पर उनका घनत्व बहुत बढ़ जाता है तो एक-दूसरे के बहुत पास होने के कारण पदार्थ ठोस (Solid) बन जाता है, तो यही पृथिवी तत्व का होना सिद्ध होता है।

(31) प्रश्नः–तो इन पंचतत्वों से सृष्टि कैसे बनी?

उत्तरः–परमाणुओं के आपस में बड़े स्तर पर जुड़ते जाने से यह सृष्टि बनी है। इसे हम आगे विस्तार से बताएँगे।

(32) प्रश्नः–सबसे पहले क्या हुआ?

उत्तरः–पूरे ब्रह्माण्ड के परमाणु आपस में एकत्रित होने लगे। ये सब विज्ञानपूर्वक जुड़ते चले गए। और बहुत ही बड़े स्तर पर ये संयुक्त होते गए।

(33) प्रश्नः–फिर संयुक्त होने के बाद क्या हुआ?

उत्तरः–तो बड़े स्तर पर जुड़ते जाने से बहुत पदार्थों का बनना आरम्भ हो गया जिसमें Gases(Helium, Neon, Hydrogen, Nitrogenetic) और परमाणुओं के आपस में घर्षण (Friction) से बहुत ही अत्यधिक तापमान (Temperature) की वृद्धि हुई। उदाहरणः–जब दो Hydrogen Atom

आपस में मिलकर Helium का एक Atom बनाते हैं। तो ये तापमान लगभग 10000000000C° से भी ऊपर होता है। वैसे ही परमाणु बम्ब से भी इतना ही तापमान होता है जिसके कारण विस्फोट होता है और सब कुछ बर्बाद होता है। तो ठीक ऐसे ही छोटे कणों के आपस में जुड़ने से बहुत बड़ा भारी तापमान उत्पन्न होने लगा।

(34) प्रश्नः–तापमान के अधिक होने पर क्या हुआ?

उत्तरः–तो ऐसे ही ये पूरे ब्रह्माण्ड में एक विशाल आग का गोला तैयार हो गया। जो कि परमाणुओं के संयोग से बना था। और कणों के मिलने से गर्मी बढ़ी तो उसमें वैसे ही विस्फोट होने लगे जैसे कि परमाणु बम द्वारा होते हैं, या सूर्य की सतह पर होते रहते हैं। जिसके कारण इस ब्रह्माण्ड के विशाल सूर्य में अग्नि प्रज्वलित हुई।

(35) प्रश्नः–यह जो विशाल सूर्य बना क्या इससे ही सारी सृष्टि बनी है?

उत्तरः–अवश्य इसी विशाल सूर्य से ही ब्रह्माण्ड में भ्रमण करने वाले पदार्थ बने।

(36) प्रश्नः–कैसे बने?

उत्तरः–फिर ईश्वर ने इसी विशाल सूर्य में एक बहुत ही बड़ा विशाल विस्फोट किया। इसी को हम Big Bang के नाम से जानते हैं।

(37) प्रश्नः–क्या ये सब ईश्वर के द्वारा ही किया गया?

उत्तरः–हाँ, ऐसा ही है। क्योंकि ईश्वर कण-कण में व्याप्त एक अखण्ड ब्रह्म चेतन तत्व है जिसमें ज्ञान और क्रिया है जिसके कारण वो परमाणुओं को विज्ञानपूर्वक आपस में संयुक्त कर पाता है। उदाहरण के लिए समुद्र के पानी का उदाहरण लें: जैसे समुद्र के पानी में लकड़ी के कुछ टुकड़े तैर रहे हों। तो कभी-कभी वो टुकड़े आपस में कभी मिल भी जाते हैं क्योंकि समुद्र का पानी उनमें व्याप्त है और वैसे ही वो अलग भी हो जाते हैं या एक दूसरे से दूर भी हो जाते हैं। पर ध्यान रहे पानी में ज्ञान या चेतना नहीं है। तो ये ईश्वर में ही है जिसके कारण वो परमाणुओं का संयोग और विभाग कर पाता है।

(38) प्रश्नः–विशाल सूर्य में विस्फोट होने के बाद क्या हुआ?

उत्तरः–विशाल सूर्य में विस्फोट तब हुआ जब वह हैमवर्ण हो चला था

(नीले लाल रंग का) क्योंकि तापमान अत्यधिक हो गया। और उसके कुछ जो बड़े-बड़े टुकड़े थे दूर-दूर हो गए। जिनको हम तारे कहते हैं और कुछ जलते हुए टुकड़े ऐसे भी रहे जिनके आसपास छोटे टुकड़े भ्रमण करने लगे या परिक्रमा करने लगे। ये बड़े टुकड़ों को सूर्य कहा गया और छोटे टुकड़ों को ग्रह नक्षत्र कहा गया। और इस भाग को ही सौरमण्डल कहा जाता है। तो ऐसे असंख्य सौरमण्डलों का निर्माण हुआ।

(39) प्रश्नः—तो फिर ये ग्रहों की अग्नि क्यों बुझ गई? और हर सौरमण्डल में सूर्य अब भी क्यों तप रहे हैं?

उत्तरः—जैसे-जैसे छोटे टुकड़े दूर होते गए और बीच में अंतरिक्ष बनता गया। लेकिन परिक्रमा करने के कारण छोटे टुकड़ों की अग्नि जल्द शांत हो गई। जैसे मान लो कोई व्यक्ति लकड़ी के टुकड़े को आग लगाकर हाथ में लेकर दौड़े तो वायु के वेग से वो लकड़ी की आग शीघ्र ही समाप्त होगी। वैसे ही आग लकड़ियों के ढेर पर लगा कर रखोगे तो वो देर से शांत होगी। ठीक ऐसा ही कुछ सूर्य और नक्षत्रों के साथ हुआ। नक्षत्रों की अग्नि शांत हो गई क्योंकि वे तीव्र गति करते हैं। लेकिन सूर्य की गति धीमी है वो आकाश गंगा के केन्द्र के अपने से बड़े सूर्य की गति करता है। तो जब सूर्य की अग्नि शांत होगी प्रलय होगी। तो यही स्थिति ब्रह्माण्ड के सभी सौरमण्डलों की है।

(40) प्रश्नः—क्या सारे ब्रह्माण्ड के पदार्थ गतिशील हैं?

उत्तरः—नक्षत्रों के उपग्रह या चन्द्रमा नक्षत्रों की परिक्रमा करते हैं, पर अपनी कील पर भी घूमते हैं। वैसे ही नक्षत्र अपने कील या अक्ष पर भी घूमते हैं और सूर्य की परिक्रमा भी करते हैं। सूर्य अपनी कील पर भी घूमता है और पूरे सौरमण्डल सहित आकाश गंगा के केन्द्र की परिक्रमा करता है। सारे पदार्थ गतिशील हैं और सबका आधार क्या है? वो है सर्वव्यापक निराकार चेतन ईश्वर जिसके कारण जड़ पदार्थ गतिशील हैं। अंतरिक्ष और पूरे ब्रह्माण्ड में यत्र-तत्र बड़े धुआँ दार बादल भी होते हैं जिनको वेदों में वृत्रासुर या महामेघ कहा जाता है। अंग्रेजी में इनको Nebula कहा जाता है समय-समय पर इन महामेघों का छेदन इन्द्र (बिजली) के द्वारा होता ही रहता है।

बड़े बावरे हिन्दी के मुहावरे

हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे हैं,
खाने पीने की चीजों से भरे हैं...
कहीं पर फल है तो कहीं आटा दालें हैं,
कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले हैं,
फलों की ही बात ले लो...

आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,
कहीं दाल में काला है,
तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती,

कोई डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कोई लोहे के चने चबाता है,
कोई घर बैठा रोटियाँ तोड़ता है,
कोई दाल-भात में मूसर चंद बन जाता है,
मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए बेलने पड़ते है कई पापड़,
आटे में नमक तो जाता है चल,
पर गेंहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,
अपना हाल तो बेहाल है, ये मुँह और मसूर की दाल है,

गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं,
कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊँट के मुँह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,
किसी के दाँत दूध के हैं,
तो कई दूध के धुले हैं,

कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,
किसी को छटी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक पीता है,
और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है,

शादी बूरे के लड्डू हैं, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खाए, वो भी पछताते हैं,
पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते हैं,
और शादी के बाद, दोनों हाथों में लड्डू आते हैं,

कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुँह में घी शक्कर है, सबकी अपनी अपनी तकदीर है...
कभी कोई चाय पानी करवाता है,
कोई मक्खन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुँह में पानी आता है।

भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी में ही जाता है,
जितने मुँह हैं, उतनी बातें हैं,
सब अपनी अपनी बीन बजाते हैं,
पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है,
सभी बहरे हैं, बावरे हैं
ये सब हिंदी के मुहावरें हैं...

ये गज़ब मुहावरे नहीं बुजुर्गों के अनुभवों की खान हैं...सच पूछो तो हिन्दी भाषा की जान हैं...थोड़ा आया था थोड़ा हमने जोड़ा है...आप भी आगे बढ़ाओ ये संदेश लम्बी दौड़ का घोड़ा है।

चारों वेद-भाष्य (8 भागों में) रु. 5600.00

संपूर्ण वेद भाष्य प्रथम बार कम्प्यूटर द्वारा मुद्रित, शुद्धतम् सामग्री नयनाभिराम छपाई, आकर्षक आवरण, उत्तम कागज, मजबूत जिल्द, सुन्दर स्पष्ट टाईप, कुल 10440 पृष्ठों में पूर्ण, शब्दार्थ व मन्त्रानुक्रमणिका सहित, आठ खण्डों में प्रस्तुत।

ऋग्वेद (चार भागों में)	**-महर्षि दयानन्द सरस्वती**	**रु. 2800.00**
अथर्ववेद (दो भागों में)	**-पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी**	**रु. 1500.00**
यजुर्वेद (एक भाग में)	**-महर्षि दयानन्द सरस्वती**	**रु. 600.00**
सामवेद (एक भाग में)	**-पं. रामनाथ वेदालंकार**	**रु. 700.00**

Forthcoming Publications

The Original Philosophy of Yoga

(The Yogasutras of Patanjali)	Dr. Tulsiram Sharma	Rs. 200.00
Light of Truth	Dr. Chiranjeev Bharadwaj	Rs. 300.00

वर्ष 2017 के नये प्रकाशन

प्यारा ऋषि	**महात्मा आनन्द स्वामी**	**रु. 20.00**
संस्कृत वाक्य प्रबोध	**महर्षि दयानन्द सरस्वती**	**रु. 40.00**
विद्यार्थी जीवन रहस्य	**महात्मा नारायण स्वामी**	**रु. 25.00**
मृत्यु रहस्य	**महात्मा नारायण स्वामी**	**रु. 20.00**
मृत्यु और परलोक	**महात्मा नारायण स्वामी**	**रु. 125.00**
वैदिक मान्यताओं का वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक विवेचन	**-डॉ. राजपाल सिंह**	**रु. 75.00**
Shri Satyanarayanavrat Katha	Swami Jagdishwaranand	Rs. 30.00
Aryoddeshya Ratna Mala	Mah. Dayanand Saraswati	Rs. 30.00

वर्ष 2016 के प्रकाशन

शान्ति मंत्र	**डॉ. पूर्ण सिंह डबास**	**रु. 15.00**
धर्म की परिभाषा	**डॉ. पूर्ण सिंह डबास**	**रु. 15.00**
आनन्द रस धारा	**प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'**	**रु. 90.00**
यज्ञ-क्या? क्यों? कैसे?	**श्री मदन रहेजा**	**रु. 35.00**
बाल शंका समाधान	**श्री मदन रहेजा**	**रु. 25.00**
Mystery of Death	**Sh. Madan Raheja**	**Rs. 150.00**

प्राप्ति स्थान: विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

4408, नई सड़क, दिल्ली-6, दूरभाष 23977216, 65360255

Email: ajayarya16@gmail.com Web: www.vedicbooks.com

मार्च २०१८ Registered with Regn. of News Paper for India
वेदप्रकाश R.No. 627/57 Regd. No. DL(DG-11)/8030/2018-20, U(DGPO) 01/2015-17
Posted at Delhi RMS, Delhi-110006

'वेद प्रकाश सम्बन्धी घोषणा'

फार्म-4

1.	प्रकाशन का स्थान	:	4408, नई सड़क, दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-32
	क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
4.	मुद्रक का पता	:	अजय प्रिंटर्स, 1586/C-13,
		:	नवीन शाहदरा एक्स,
		:	दिल्ली-32
5.	प्रकाशक का नाम	:	अजयकुमार
6.	क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
7.	प्रकाशक का पता	:	4408, नई सड़क, दिल्ली
8.	सम्पादक का नाम	:	अजयकुमार
	क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
	सम्पादक का पता	:	16 जयपुरिया एन्क्लेव,
		:	कौशाम्बी, गाजियाबाद-201010
	उन व्यक्तियों के नाम व पते	:	अजयकुमार
	जो समाचार पत्र के स्वामी	:	16 जयपुरिया एन्क्लेव,
	हों तथा जो समस्त पूँजी के	:	कौशाम्बी, गाजियाबाद-201010
	एक प्रतिशत से अधिक के		
	साझेदार या हिस्सेदार हों।		

मैं अजयकुमार एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये हुए विवरण सत्य हैं।

-अजयकुमार, प्रकाशक
वेदप्रकाश